''तुलसी के काव्य द्वारा आदर्श समाज के परिप्रेक्ष्य में विचार मंथन''

रेनू चौरसिया

मध्यकलीन भक्तकवियों में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान अत्यन्त श्रेष्ठ है। गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण धारा के अन्तर्गत आने वाली रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके साहित्य रूपी सागर का जितना अधिक मंथन होता जाता है उतने ही अमूल्य विचार रूपी रत्नों की प्राप्ति हमें होती जाती है। गोस्वामी तुलसीदास भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जाते हैं, उनकी दृष्टि अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है। उनके साहित्य के विषय में डॉ0 नगेन्द्र का विचार है कि, ''एक ओर तो उन्होंने नाथ पंथियों के प्रभाव से नष्ट होती हुई जनमानस की विश्वासमयी रागात्मिका वृत्तियों को रामभक्ति के माध्यम से पुनः पल्लवित किया और दूसरी ओर रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के आदर्शों को जनता के सामने प्रस्तुत कर विश्रृंखलित हिन्दू समाज को केंद्रित किया।'